



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम  |
|--------------------|------------|--------------|-------|
| दैनिक भास्कर       | 04.07.2020 | 01           | 01-05 |

# एचएसू का सात सूत्रीय अभियान • कोरोना से बचाव के लिए वीसी ने स्टाफ-स्टडेंट्स को वेबिनार में बताए संस्कृति के सूत्र नमस्ते, दिन में दो बार स्नान, जूते-चप्पल घर में नहीं, बासी भोजन का त्याग, नीम के पते, कपड़े घर से बाहर धोना और नित्य योग

महबूब अली | हिसार



भारतीय संस्कृति को अपनाकर कोरोना संक्रमण के खतरे से बचा जा सकता है। सनातन जीवन शैली में सब कुछ नियत था। हाथ जोड़कर अभिवादन हमारी संस्कृति का हिस्सा रहा है। सामाजिक दूरी को आज पूरी दुनिया कोरोना से बचाव के लिए स्वीकार कर रही है। लेकिन हम पाश्चात्य संस्कृति के चक्कर में अपनी

संस्कृति को भूला बैठे हैं। एचएसू के कुलपति प्रो. कौपी सिंह ने वेबिनार, मेसेज के माध्यम से विविक के स्टाफ और छात्र एवं छात्राओं से यह अपील की है। विविमें एक तरह से सात सूत्रीय अभियान आगाज किया गया है। जिसके माध्यम से सभी को संस्कृति के सूत्र बताए जा रहे हैं। कुलपति प्रो. कौपी सिंह का कहना है कि अभियान का मुख्य उद्देश्य भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूकता लाना है। अभियान सात सूत्रों पर फोकस रहेगा। कोरोना से बचाव के मद्देनजर मास्क और सेनिटाइजर का प्रयोग भी जरूरी है।

संस्कृति को भूला बैठे हैं। एचएसू के

कुलपति प्रो. कौपी सिंह ने वेबिनार,

मेसेज के माध्यम से विविक के स्टाफ

और छात्र एवं छात्राओं से यह

अपील की है। विविमें एक तरह से

सात सूत्रीय अभियान आगाज किया

गया है। जिसके माध्यम से सभी को

संस्कृति के सूत्र बताए जा रहे हैं।

कुलपति प्रो. कौपी सिंह का कहना

है कि अभियान का मुख्य उद्देश्य

भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूकता

लाना है। अभियान सात सूत्रों पर

फोकस रहेगा। कोरोना से बचाव के

मद्देनजर मास्क और सेनिटाइजर का

प्रयोग भी जरूरी है।

**वीसी ने भारतीय संस्कृति से जुड़े इन 7 सूत्रों को अपनाने का किया आह्वान**

■ **नमस्ते:** भारतीय संस्कृति में हथ

मिलाने की परंपरा कभी नहीं रही।

हाथ जोड़कर अभिवादन करते थे।

आज यही हाथ जोड़ने की परंपरा

कोरोना जैसी महामारी में बचाव के

काम आ रही है।

■ **दो बार स्नान:** दो बार स्नान

हमारी संस्कृति का हिस्सा था।

सुबह स्नान कर पूजा पाठ करते थे

और शाम को स्नान करके संध्या।

कोरोना से बचने को हम बाहर से

आने के बाद स्नान कर रहे हैं।

■ **जूते-चप्पल घर में नहीं:**

भारतीय संस्कृति में घर में जूते-

चप्पल ले जाने की परंपरा नहीं थी।

बाहर ही नल पर हाथ-पांव धोकर

घर में प्रवेश करते थे। आज फिर

से हम यही कर रहे हैं।

■ **बासी भोजन का त्याग:** बासी

भोजन हमारी संस्कृति का हिस्सा

नहीं रहा। तीन समय घरों में तजा

भोजन बनाया जाता था। भोजन बच

जाता था तो वह पशुओं को देते थे।

■ **नीम के पते:** पहले प्रत्येक घर

में नीम का पेढ़ होता था। नीम की

दातून करते थे। चर्म रोग होने पर

नीम के पानी से स्नान करते थे।

आज दुनिया मान रही है कि नीम

एंटी बैक्टीरियल है।

■ **घर के बाहर कपड़े धोना:** पुरातन

समय में लोग घर के बाहर तालाब या

नदी में कपड़े धोते थे। कोरोना काल

में फिर यही प्रयास है कि बाहर से

आने पर कपड़े बाहर ही धोए जाएं।

■ **योग जीव का हिस्सा:** भारतीय

संस्कृति में योग सर्वोपरि रहा है।

इससे हम अपनी श्वसन क्रिया को

मजबूत करते थे। योग से शारीरिक

मजबूती आती है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम  |
|--------------------|------------|--------------|-------|
| दैनिक भास्कर       | 04.07.2020 | 04           | 01-05 |

**राहत •** 12 विद्यार्थियों ने तीन माह विदेशों में लिया विशेष प्रशिक्षण, प्रो.के.पी सिंह बोले-ट्रेनिंग का करें यहां प्रयोग तीन माह बाद ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड से लौटे एचएयू के छात्रों के दल ने पूरा किया क्वारेंटाइन पीरियड, वीसी ने की मुलकात

भारत न्यू | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विद्यार्थियों का 12 सदस्यीय दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद हिसार लौट आया है। यह दल 17 जून को हिसार लौटा और तब से ही एचएयू के फैकल्टी हाउस में बने कोविड-19 सेंटर में क्वारेंटाइन किया हुआ था। 3 जुलाई को क्वारेंटाइन का समय समाप्त होने पर यह दल एचएयू के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह से मिला और अपने प्रशिक्षण तथा कोविड-19 के चलते आई परेशानियों आदि के बारे में चर्चा वृद्धि होगी।

की। एचएयू के कुलपति प्रोफेसर के.पी.सिंह ने दल के सभी विद्यार्थियों के सकुशल देश लौटने पर बधाई दी। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि अपने इस तीन महीने के प्रशिक्षण के दौरान जो भी तकनीकें उन्होंने ऑस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड में सीखी हैं, उनको यहां लागू करने की कोशिश करें ताकि यहां के अन्य विद्यार्थियों को भी उनसे प्रेरणा मिल सके। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे उत्तम गुणवत्ता वाले प्रकाशनों को बढ़ावा दें, इससे बेहतर अनुसंधानिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और गुणवत्ता में परेशानियों आदि के बारे में चर्चा वृद्धि होगी।

अपने क्षेत्र में महारत हासिल करने के लिए प्रतिवर्ष जाता है छात्रों का दल प्रो. के.पी.सिंह ने बताया कि एचएयू के विद्यार्थी प्रतिवर्ष राष्ट्रीय कृषि उच्च शैक्षणिक परियोजना- संस्थान विकास योजना के तहत विश्व के विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण के लिए जाते हैं ताकि उन्हें अपने क्षेत्र में और अधिक महारत हासिल हो सके। एक दल 10 मार्च को आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी व दूसरा दल 13 मार्च को न्यूजीलैंड की मैसै यूनिवर्सिटी में गया था।

छात्रों ने कुलपति व विश्वविद्यालय प्रशासन का जताया आभार

दल में शामिल बी.एससी अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों आरजू संघा, अंजली, हेमंत, भूषण, सुमय मलिक, प्रीति, अमन मदान, विनीत कुमार, साहिल व कन्नौज ने बताया कि कोविड-19 के चलते उन्हें कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा लेकिन एचएयू के कुलपति प्रो. के.पी.सिंह व अनुसंधान निदेशक डॉ. एम्से सहायत उनसे लगातार संपर्क में रहे और उनकी हासिला अफजाई करते रहे।

#### गेहूं की रुवा बीमारी संबंधी हासिल की कई जानकारियां

विद्यार्थियों के दल ने बताया कि आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी में जाकर उन्होंने गेहूं में अनेवाली रुआ बीमारी को लेकर अनेक जानकारियां हासिल कीं। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया में गेहूं की रुवा बीमारी संबंधी शोध के लिए विश्व के बड़े केंद्रों में से एक है। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड जैसे विकसित देश आधुनिक तकनीकों, सॉफ्टवेयर व मशीनरियों का प्रयोग करके ग्रीन हाउस में सारा साल रिसर्च करते रहते हैं, जबकि अपने यहां मौसम अनुसार ही रिसर्च की जाती है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम  |
|--------------------|------------|--------------|-------|
| दैनिक भास्कर       | 04.07.2020 | 01           | 07-08 |

## एचएयू में कृषि रसायन एवं उर्वरक में 1 वर्षीय डिप्लोमा शुरू, 30 सीटें

18 से 55 वर्ष तक के 12वीं पास कर सकेंगे आवेदन

भास्कर न्यूज | हिसार

एचएयू में पहली बार कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू किया जाएगा। कुलपति प्रो. केपी सिंह ने बताया कि आवेदन के लिए उम्मीदवार का 12वीं पास होना जरूरी है और 18 से 55 वर्ष तक की आयु वर्ग के इच्छुक उम्मीदवार इसमें आवेदन कर सकते हैं। कोर्स संबंधी फीस, दाखिला प्रक्रिया व अन्य जानकारियों को उम्मीदवार विश्वविद्यालय की वेबसाइट डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डाट एचएयू ए.सी.डाट इनसे प्राप्त कर सकते हैं।

है। कुलपति प्रो. केपी सिंह ने बताया कि आवेदन के लिए उम्मीदवार का 12वीं पास होना जरूरी है और 18 से 55 वर्ष तक की आयु वर्ग के इच्छुक उम्मीदवार इसमें आवेदन

कर सकते हैं। कोर्स संबंधी फीस, दाखिला प्रक्रिया व अन्य जानकारियों को उम्मीदवार विश्वविद्यालय की वेबसाइट डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डाट एचएयू ए.सी.डाट इनसे प्राप्त कर सकते हैं।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि इस कोर्स में दाखिला कृषि महाविद्यालय हिसार, कृषि महाविद्यालय कौल(कैथल) व कृषि महाविद्यालय बावल (रेवाड़ी) के लिए अलग-अलग होंगे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम  |
|--------------------|------------|--------------|-------|
| दैनिक भास्कर       | 04.07.2020 | 04           | 07-08 |

## प्लास्टिक के प्रयोग से पर्यावरण को हो रहा नुकसान : प्रो. केपी सिंह

**अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे पर बोले वीसी प्लास्टिक को अपनी दैनिक इस्तेमाल की जस्तरातों में शामिल न करें, क्योंकि इसका प्रयोग हानिकारक है।**

भारकर न्यूज़ | हिसार

वर्तमान समय में प्लास्टिक का प्रयोग काफी बढ़ गया है। प्लास्टिक हमारे लिए हानिकारक है, लेकिन इसके दुष्प्रभाव को जानते हुए भी लोग बैग से लेकर चाय के कप व अन्य चीज़ में इसका प्रयोग करते हैं। इसका नुकसान न केवल मासूम पशु-पक्षियों से लेकर पर्यावरण तक को हो रहा है बल्कि इससे आने वाली पीड़ियों का जीवन भी काफी प्रभावित होगा।

उक्त विचार एचएयू के कुलपति प्रो. केपी सिंह ने व्यक्त किए। उन्होंने 'अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे' पर लोगों से आह्वान

किया कि वे प्लास्टिक को अपनी दैनिक इस्तेमाल की जस्तरातों में शामिल न करें, क्योंकि इसका प्रयोग हानिकारक है।

उन्होंने कहा कि प्लास्टिक से होने वाले नुकसान और इसके बढ़ते प्रयोग को रोकने के लिए 'अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे' मनाया जाता है। प्लास्टिक एक हानिकारक पदार्थ है और बैग के रूप में इसका प्रयोग काफी अधिक होता है। उन्होंने कहा कि लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने के लिए ही 3 जुलाई 2009 से पूरी दुनिया में 'अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे' मनाने की शुरुआत हुई थी। कई सामाजिक संस्थाएं, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक कर रही हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|------------|--------------|------|
| दैनिक भास्कर       | 04.07.2020 | 01           | 06   |

#### **मौसम अपडेट**

#### **आज से 6 जुलाई तक बूंदाबांदी के आसार**

हिसार | शहर में शुक्रवार को अधिकतम तापमान 44.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। जोकि सामान्य से 5 डिग्री अधिक रहा। न्यूनतम तापमान में सामान्य से 4 डिग्री सेल्सियस अधिक दर्ज किया गया। रात का तापमान 31.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

एचएयू के कृषि मौसम विभाग के अध्यक्ष डॉ. मदन खीचड़ ने बताया कि 27 जून से दक्षिण पश्चिमी मॉनसूनी हवाओं का टर्फ हिमालय की तलहटियों व उत्तर पूर्व व पूर्वोत्तर भागों की तरफ चले जाने से उत्तरी भारत में मॉनसूनी हवाएं कमजोर हो गई थी। शुक्रवार को मॉनसूनी हवाओं के टर्फ में बदलाव होना शुरू हो गया जिससे हवाएं फिर से मैदानी क्षेत्रों की तरफ बढ़नी शुरू हुई है तथा बंगाल की खाड़ी के साथ-साथ अरब सागर से भी नमी वाली हवाएं आने की संभावना है। मॉनसूनी हवाओं के आगे बढ़ने से 4 जुलाई से 6 जुलाई के बीच राज्य के सभी क्षेत्रों में हल्की से मध्यम बारिश की संभावना है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम  |
|--------------------|------------|--------------|-------|
| दैनिक जागरण        | 04.07.2020 | 01           | 01-04 |

**हासल बरकरार** कई छात्रों को प्रोजेक्ट वीच में छोड़कर विदेशों से लौटना पड़ा

# विवि में जारी रही रिसर्च, विदेशों से जुड़ा काम प्रभावित

वैगंश शर्मा • हिसार

तीन महीने छह दिन बाद भी शिक्षण कार्यों पर बंदिशें जारी हैं। ऐसे में हिसार के चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) और लाला लाजपत राश पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (लुवास) में रिसर्च को लेकर नए तथ्य सामने आए हैं। दोनों ही विश्वविद्यालयों को लॉकडाउन के दौरान और बाद में रिसर्च करने में कोई बड़ी दिक्कत नहीं आई। इस कार्य में प्रतिफल यह रहा कि लुवास ने तो कुछ अपने पुराने रिसर्च प्रोजेक्ट तक पूरे कर लिए। तो एचएयू ने भी अपने प्रोजेक्टों को जारी रखा। हालांकि विदेशी समन्वय से चल रही रिसर्च प्रभावित जरूरी हुई है।

**द्वितीय वर्ष के छात्रों की रिसर्च रुकी**

विदेशी शिक्षण संस्थानों के साथ चल रहे कई रिसर्च प्रोजेक्टों जैसे स्पार्क पार्सियोजना, आइडीपी प्रोजेक्ट में गए कई छात्रों को समय से पहले ही विदेशों से वापस आना पड़ा। इसके साथ ही कुछ विद्यार्थियों का समय पूरा होना तो वह भी लौट आए। विवि प्रशासन की माने तो फाइनल इयर के विद्यार्थियों की रिसर्च आदि पूरी है मगर द्वितीय वर्ष के छात्रों को अब अनुसंधान शुरू करना चाहिए था मगर शिक्षण संस्थान बंद होने से यह प्रभावित हुआ है।

**एचएयू में 90 से अधिक रिसर्च प्रोजेक्ट संचालित**

एचएयू में करीब 90 से अधिक रिसर्च प्रोजेक्ट विभिन्न योजनाओं में चल रहे हैं। इसके साथ ही बाहर के केन्द्रों में भी रिसर्च कराई जाती है। कुछ समय तो विवि पूरी तरह से बंद रहा जिससे काफी काम रुके रहे। हालांकि इस दौरान एचएयू के फार्म पर फसलों को काटने से लेकर बोने तक का काम किया गया। इसके बाद जब लॉकडाउन-2 की घोषणा में अनुमति मिली तो फिर से कई कार्यों को शुरू कर दिया गया। लैब का काम भी किया जाने लगा।

**लुवास ने कई प्रोजेक्ट किए पूरे**

लुवास से ई-गवर्नेंस टीम के सदस्य डा. नीलेश ने बताया कि कई प्रोजेक्ट लुवास ने लॉकडाउन के दौरान पूरे किए हैं। इनमें से कुछ भारत सकरार के पास तक गए हैं। क्योंकि लुवास का फार्लड रिसर्च पशुओं के फार्म पर होता है, ऐसे में हमें फार्लड से इनपुट मिलता रहा, विज्ञानी लैब में उस इनपुट का प्रयोग करते रहे। रिसर्च में विद्यार्थी आए या न आए शिक्षकों को आना अनिवार्य है। इसके साथ प्रयोगों में 'उपयोग में लाए जाने वाले कैमिकल भी हमें समय पर मिले।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम  |
|--------------------|------------|--------------|-------|
| दैनिक जागरण        | 04.07.2020 | 03           | 07-08 |

### आस्ट्रेलिया-न्यूजीलैंड में तकनीकि तो भारत में मौसम पर निर्भर रिसर्च

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के 12 सदस्यीय विद्यार्थियों का दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड से लौटा है। शुक्रवार को क्वारंटाइन का समय समाप्त हुआ तो विवि प्रशासन ने छात्रों से अनुभव पूछे। इसमें छात्रों ने बताया कि आस्ट्रेलिया में गेहूं की रतुवा बीमारी पर कई शोध हुए हैं। आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड जैसे विकसित देश

आधुनिक तकनीकों, सॉफ्टवेयर व मशीनों का प्रयोग कर ग्रीन हाउस में वर्ष भर रिसर्च करते हैं। जबकि अपने यहां मौसम अनुसार ही रिसर्च की जाती है। वहां की रिसर्च के परिणाम भी अपनी तुलना में आधुनिक तकनीकों की वजह से जल्दी आ जाते हैं। विकसित देश मशीनरी व तकनीकों का अधिक प्रयोग कर उत्पादन को बढ़ाते हैं। अपने यहां ऐसी तकनीक की अभी जरूरत है। (जासं)



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम  |
|--------------------|------------|--------------|-------|
| हरि भूमि           | 04.07.2020 | 12           | 01-06 |

**तीन महीने के प्रशिक्षण के बाद लौटा हक्की का 12 सदस्यीय दल**

# आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड की तकनीकों को अपनाएं विद्यार्थी

■ राष्ट्रीय कृषि शैक्षणिक परियोजना संस्थागत विकास योजना के तहत गया था दल

हरिभूमि व्हाइटर

हक्की के विद्यार्थियों का एक 12 सदस्यीय दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद हिसार लौटा आया है। यह दल 17 जून को हिसार लौटा था और तब से ही विश्वविद्यालय के फैकल्टी हाउस में बने कोविड-19 सेंटर में क्वारंटाइन किया हुआ था। 3 जुलाई को क्वारंटाइन का समय समाप्त होने पर यह दल कपी सिंह से मिला और अपने आई परेशानियों आदि के बारे में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर प्रशिक्षण तथा कोविड-19 के चलते विस्तार से चर्चा की।

हक्की के विद्यार्थियों को सिडनी यूनिवर्सिटी द्वारा दिए गए छात्रवृत्ति और अन्य सहायताएँ ले लिए गए थे। यह दल 17 जून को हिसार लौटा आया है। यह दल 12 सदस्यीय था और तब से ही विश्वविद्यालय के फैकल्टी हाउस में बने कोविड-19 सेंटर में क्वारंटाइन किया हुआ था। 3 जुलाई को क्वारंटाइन का समय समाप्त होने पर यह दल कपी सिंह से मिला और अपने आई परेशानियों आदि के बारे में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर प्रशिक्षण तथा कोविड-19 के चलते विस्तार से चर्चा की।

■ राष्ट्रीय कृषि शैक्षणिक परियोजना संस्थागत विकास योजना के तहत गया था दल

हरिभूमि व्हाइटर

हक्की के विद्यार्थियों का एक 12 सदस्यीय दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद हिसार लौटा आया है। यह दल 17 जून को हिसार लौटा था और तब से ही विश्वविद्यालय के फैकल्टी हाउस में बने कोविड-19 सेंटर में क्वारंटाइन किया हुआ था। 3 जुलाई को क्वारंटाइन का समय समाप्त होने पर यह दल कपी सिंह से मिला और अपने आई परेशानियों आदि के बारे में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर प्रशिक्षण तथा कोविड-19 के चलते विस्तार से चर्चा की।

हक्की के विद्यार्थियों का एक 12 सदस्यीय दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद हिसार लौटा आया है। यह दल 17 जून को हिसार लौटा था और तब से ही विश्वविद्यालय के फैकल्टी हाउस में बने कोविड-19 सेंटर में क्वारंटाइन किया हुआ था। 3 जुलाई को क्वारंटाइन का समय समाप्त होने पर यह दल कपी सिंह से मिला और अपने आई परेशानियों आदि के बारे में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर प्रशिक्षण तथा कोविड-19 के चलते विस्तार से चर्चा की।

■ राष्ट्रीय कृषि शैक्षणिक परियोजना संस्थागत विकास योजना के तहत गया था दल

हरिभूमि व्हाइटर

हक्की के विद्यार्थियों का एक 12 सदस्यीय दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद हिसार लौटा आया है। यह दल 17 जून को हिसार लौटा था और तब से ही विश्वविद्यालय के फैकल्टी हाउस में बने कोविड-19 सेंटर में क्वारंटाइन किया हुआ था। 3 जुलाई को क्वारंटाइन का समय समाप्त होने पर यह दल कपी सिंह से मिला और अपने आई परेशानियों आदि के बारे में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर प्रशिक्षण तथा कोविड-19 के चलते विस्तार से चर्चा की।

हक्की के विद्यार्थियों का एक 12 सदस्यीय दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद हिसार लौटा आया है। यह दल 17 जून को हिसार लौटा था और तब से ही विश्वविद्यालय के फैकल्टी हाउस में बने कोविड-19 सेंटर में क्वारंटाइन किया हुआ था। 3 जुलाई को क्वारंटाइन का समय समाप्त होने पर यह दल कपी सिंह से मिला और अपने आई परेशानियों आदि के बारे में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर प्रशिक्षण तथा कोविड-19 के चलते विस्तार से चर्चा की।

### हर वर्ष जाता है विद्यार्थियों का दल

प्रोफेसर कपी सिंह ने बताया कि हक्की के विद्यार्थी प्रतिवर्ष राष्ट्रीय कृषि शैक्षणिक परियोजना संस्थागत विकास योजना के तहत विशेष के विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण के लिए जाते हैं। कुलपति ने बताया कि विद्यार्थियों के द्वारा दल विदेश गए थे, जिनमें एक दल 10 मार्च को आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी तथा दूसरा दल 13 मार्च को न्यूजीलैंड की मैरी यूनिवर्सिटी में गया था। विद्यार्थियों को चयन उनके टेस्ट व समुद्र चर्चा जैसी कई प्रक्रियाओं के आधार पर किया गया था, जिसमें बीमारी अन्तिम वर्ष के विद्यार्थी ही शामिल थी।

### ये विद्यार्थी ये दल में शामिल

विदेश गए हक्की के दल में बीस से अधिक वर्ष से आरजू संध्या, अंजली, हेमंत, मुख्य, सुमय नैनक, प्रतीक, अमन मदाव, विनीत कुमार, साहिल व कम्बौज

शामिल थे। उन्होंने बताया कि कुलपति प्रो. कपी सिंह व अनुरेधन निदेशक डॉ. स्पैके सहरावत उनसे लगातार संपर्क में रहे और उनकी ही सला अफज़ल करते रहे।

### गेहूं की रत्ना बीमारी संबंधी हासिल की कई जानकारियां

ऑस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी में जाकर विद्यार्थियों ने गेहूं में आने वाली रनुआ बीमारी को लेकर अनेक जानकारियां हासिल की। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया में गेहूं की रनुआ बीमारी संबंधी शोध के लिए विश्व के बड़े केंद्रों में से एक है। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड जैसे विभिन्न देश आगुविक तकनीकों, साप्टवेयर व डीजीएसी का प्रयोग करके ग्रीन हाउस में सारा साल रिसर्च करते रहते हैं। जबकि अपने यहां मौसम अनुसार ही रिसर्च की जाती है। वहां की रिसर्च के परिणाम में अपनी तुलना में आधुनिक तकनीकों की वजह से जल्दी आ जाते हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम  |
|--------------------|------------|--------------|-------|
| हरि भूमि           | 04.07.2020 | 03           | 07-08 |

# हकृति में कृषि रसायन एवं उर्वरक में डिप्लोमा आरंभ

**हरिभूमि न्यूज ||| हिसार**

हकृति में पहली बार कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू किया जाएगा। जो युवाओं को स्वावलंबी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। पहली बार शुरू होने वाले इस एक वर्षीय डिप्लोमा में कुल 30 सीट निर्धारित की गई हैं। जिसमें से अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए 20 प्रतिशत, पिछड़ी जाति के उम्मीदवारों के लिए 27 प्रतिशत और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए 10 प्रतिशत सीटों का निर्धारण किया गया है। आवेदन के लिए उम्मीदवार का 12वीं पास होना जरूरी है और 18 से 55 वर्ष तक की आयु वर्ग के इच्छुक इसमें आवेदन कर सकते

हैं। कोर्स संबंधी फीस, दाखिला प्रक्रिया व अन्य जानकारियों को उम्मीदवार विश्वविद्यालय की वेबसाइट से प्राप्त कर सकते हैं।

### **पहली बार कोर्स शुरू**

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि इस कोर्स में दाखिला कृषि महाविद्यालय हिसार, कृषि महाविद्यालय बावल के लिए अलग-अलग होंगे। उनकी कक्षाएं भी अलग-अलग लगाई जाएंगी। उन्होंने बताया कि दो सेमेस्टर वाले इस डिप्लोमा में दाखिला 12वीं कक्षा में प्राप्त अंकों और संबंधित क्षेत्र में अनुभव के 80 : 20 के अनुपात में किया जाएगा। इसके लिए कम से कम छह महीने और अधिकतम दो वर्ष का अनुभव ही मान्य होगा।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम  |
|--------------------|------------|--------------|-------|
| हरि भूमि           | 04.07.2020 | 11           | 03-04 |

# प्लास्टिक का प्रयोग न करने की सलाह

- दुष्प्रभाव को जानते हुए भी कर रहे  
इसका इस्तेमाल

हरिभूमि न्यूज ► हिसार

वर्तमान समय में प्लास्टिक का प्रयोग काफी बढ़ गया है। प्लास्टिक हमारे लिए हानिकारक है, लेकिन इसके दुष्प्रभावों को जानते हुए भी लोग बैग से लेकर चाय के कप के रूप तक हर चीज में इसका प्रयोग करते हैं। इसका नुकसान न केवल

मासूम पशु-पक्षियों से लेकर मौजूदा पर्यावरण को हो रहा है बल्कि इससे आने वाली पीढ़ियों का जीवन भी काफी प्रभावित होगा। यह विचार हक्किं कुलपति प्रो. केपी सिंह ने व्यक्त किए। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे के अवसर पर लोगों से आह्वान किया कि वे प्लास्टिक को अपनी दैनिक इस्तेमाल की जरूरतों में शामिल न करें। प्लास्टिक से होने वाले नुकसान के बारे में बताया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम  |
|--------------------|------------|--------------|-------|
| पंजाब केसरी        | 04.07.2020 | 04           | 01-04 |

# आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड से लौटे विद्यार्थियों के दल से मिले कुलपति

हिसार, 3 जुलाई (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के एक 12 सदस्यीय दल ने कुलपति प्रो. के.पी. सिंह से मुलाकात की। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने इस दल के सभी विद्यार्थियों के सकृशल देश लौटने पर बधाई दी है। उन्होंने विद्यार्थियों से आहान किया कि अपने इस 3 महीने के प्रशिक्षण के दौरान जो भी तकनीकें



आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड से लौटा विद्यार्थियों का दल कुलपति प्रो. के.पी. सिंह के साथ मुलाकात करते हुए।

उन्होंने आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड में सीखी हैं, उनको यहां लागू करने की

### प्रतिवर्ष जाता है विद्यार्थियों का दल

प्रो. के.पी. सिंह ने बताया कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी प्रतिवर्ष राष्ट्रीय कृषि उच्च शैक्षणिक परियोजना-संस्थागत विकास योजना के तहत विश्व के विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण के लिए जाते हैं ताकि उन्हें अपने क्षेत्र में और अधिक महारत हासिल हो सके। कुलपति ने बताया कि विद्यार्थियों के 2 दल विदेश गए थे, जिनमें एक दल 10 मार्च को आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी व दूसरा दल 13 मार्च को न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी में गया था। विद्यार्थियों का यान उनके टैस्ट व समूह चर्चा जैसी कई प्रक्रियाओं के आधार पर किया गया था, जिसमें बी.एस.सी. अंतिम वर्ष के विद्यार्थी ही शामिल थे।

### विदेश से आने के बाद क्वारंटाइन हो गया था दल

3 महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद विद्यार्थियों का यह दल 17 जून को हिसार लौटा था और तब से ही विश्वविद्यालय के फैकल्टी हाऊस में बने कोविड-19 सेंटर में क्वारंटाइन किया हुआ था। 3 जुलाई को क्वारंटाइन का समय समाप्त होने पर यह दल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह से मिला और अपने प्रशिक्षण तथा कोविड-19 के चलते आई परेशानियों आदि के बारे में विस्तार से चर्चा की।

### गेहूं की रतवा बीमारी संबंधी हासिल की कई जानकारियां

विद्यार्थियों के दल ने बताया कि आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी में जाकर उन्होंने गेहूं में आने वाली रुआ बीमारी को लेकर अनेक जानकारियां हासिल कीं। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया में गेहूं की रतवा बीमारी संबंधी शोध के लिए विश्व के बड़े केंद्रों में से एक है। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड जैसे विकसित देश आधुनिक तकनीकों, साफ्टवेयर व मशीनरियों का प्रयोग करके ग्रीन हाऊस में सारा साल रिसर्च करते रहते हैं, जबकि अपने यहां मौसम अनुसार ही रिसर्च की जाती है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम  |
|--------------------|------------|--------------|-------|
| पंजाब केसरी        | 04.07.2020 | 04           | 02-03 |

# कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा से युवा होंगे स्वावलंबी

हिसार, 3 जुलाई (ब्यूरो) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पहली बार कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू किया जाएगा जो युवाओं को स्वावलंबी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

**30 सीटों पर होगा दाखिला :** पहली बार शुरू होने वाले इस एक वर्षीय डिप्लोमा में कुल 30 सीट निर्धारित की गई हैं, जिनमें से अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए 20 प्रतिशत, पिछड़ी जाति के उम्मीदवारों के लिए 27 प्रतिशत और आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग के लिए 10 प्रतिशत सीटों का निर्धारण किया गया है। उन्होंने बताया कि आवेदन के लिए उम्मीदवार का 12वाँ पास होना

जरूरी है और 18 से 55 वर्ष तक के आयु वर्ग के इच्छुक उम्मीदवार इसमें आवेदन कर सकते हैं।

**पहली बार कोर्स शुरू :** कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एस.के. सहरावत ने बताया कि इस कोर्स में दाखिला कृषि महाविद्यालय हिसार, कृषि महाविद्यालय कौल (कैथल) व कृषि महाविद्यालय बावल (रेवाड़ी) के लिए अलग-अलग होंगे व उनकी कक्षाएं भी अलग-अलग लगाई जाएंगी। उन्होंने बताया कि 2 सैमेस्टर वाले इस डिप्लोमा में दाखिला 12वाँ कक्षा में प्राप्त अंकों और संबंधित क्षेत्र में अनुभव के 80:20 के अनुपात में किया जाएगा। इसके लिए कम से कम 6 महीने और अधिकतम 2 वर्ष का अनुभव ही मान्य होगा।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम  |
|--------------------|------------|--------------|-------|
| अमर उजाला          | 04.07.2020 | 02           | 03-04 |

## एचएयू में कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा होगा शुरू, 30 सीटें की गई निर्धारित

हिसार (ब्यूरो)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में नए सत्र से कृषि रसायन व उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू किया जाएगा जो युवाओं को स्वावलंबी बनाने में अहम भूमिका निभाएगा। इस एक वर्षीय डिप्लोमा में कुल 30 सीट निर्धारित की गई हैं, जिसमें से अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए 20 प्रतिशत, पिछड़ी जाति के उम्मीदवारों के लिए 27 प्रतिशत और आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग के लिए 10 प्रतिशत सीटों का निर्धारण किया गया है। उन्होंने बताया कि आवेदन के लिए उम्मीदवार का 12वीं पास होना जरूरी है और 18 से 55 वर्ष तक की आयु वर्ग के इच्छुक उम्मीदवार इसमें आवेदन कर सकते हैं।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के सहरावत ने बताया कि इस कोर्स में दाखिला

कृषि महाविद्यालय हिसार, कृषि महाविद्यालय कौल (कैथल) व कृषि महाविद्यालय बावल (रेवाड़ी) के लिए अलग-अलग होंगे व उनकी कक्षाएं भी अलग-अलग लगाई जाएंगी। दो सेमेस्टर वाले इस डिप्लोमा में दाखिला 12वीं कक्षा में प्राप्त अंकों और संबंधित क्षेत्र में अनुभव के 80 : 20 के अनुपात में किया जाएगा। इसके लिए कम से कम छह महीने और अधिकतम दो वर्ष का अनुभव ही मान्य होगा। यह डिप्लोमा उन अभ्यर्थियों के लिए बहुत ही फायदेमंद होगा, जिन्हें कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी कृषि की आधारभूत जानकारी नहीं है। इस कोर्स को करने के बाद डिप्लोमा धारक किसान समुदाय की कृषि में कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी उपयोग के लिए बेहतर ढंग से सहायता कर सकेंगे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम  |
|--------------------|------------|--------------|-------|
| अमर उजाला          | 04.07.2020 | 02           | 01-02 |

### आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड से लौटे एचएयू के विद्यार्थी वीसी से मिले

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के विद्यार्थियों का 12 सदस्यीय दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड से हिसार लौटा। क्वारंटीन अवधि पूरी होने के बाद शुक्रवार को यह दल कुलपति प्रो. केपी सिंह से मिला और प्रशिक्षण के बारे में चर्चा की। विद्यार्थियों ने बताया कि आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी में जाकर उन्होंने गहुं में आने वाली रतुआ बीमारी को लेकर कई जानकारियां हासिल कीं। वहां रतुआ बीमारी संबंधी शोध के लिए विश्व के बड़े केंद्रों में से एक है। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड जैसे विकसित देश आधुनिक तकनीकों, सॉफ्टवेयर व मशीनरियों का प्रयोग करके ग्रीन हाउस में सारा साल रिसर्च करते रहते हैं, जबकि अपने यहां मौसम अनुसार ही रिसर्च की जाती है। वहां की रिसर्च के परिणाम भी अपनी तुलना में आधुनिक तकनीकों की वजह से जल्दी आ जाते हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|------------|--------------|------|
| सिटी पल्स          | 03.07.2020 | --           | --   |

# कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा करके युवा होंगे स्वावलंबी

**चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने पहली बार शुरू होगा कोर्स**

सिटी पल्स न्यूज, हिसार।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पहली बार कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू किया जाएगा जो युवाओं को स्वावलंबी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह कोर्स कुलपति प्रोफेसर के.पी.सिंह की युवाओं के प्रति दूरदर्शी सोच के परिणामस्वरूप व प्रयासों से शुरू किया जा रहा है। कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह के प्रयासों से विश्वविद्यालय में इस तरह के कई कोर्स पहले भी शुरू किए जा चुके हैं जो किसानों, युवाओं, महिलाओं व अम लागों को स्वावलंबी बनाने में काफ़ी उपयोगी साबित हो रहे हैं।

### 30 सीटों पर होगा दाखिला

पहली बार शुरू होने वाले इस एक वर्षीय डिप्लोमा ने कुल 30 सीट निर्धारित की गई है, जिसने से अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए 20 प्रतिशत, पिछड़ी जाति के उम्मीदवारों के लिए 27 प्रतिशत और आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग के लिए 10 प्रतिशत सीटों का निर्धारण किया गया है। उन्होंने बताया कि आवेदन के लिए उम्मीदवार का 12वीं पास होना जरूरी है और 18 से 55 वर्ष तक की आयु वर्ग के इस्तेवा उम्मीदवार इसने आवेदन कर सकते हैं। कोर्स संबंधी फीस, दाखिला प्रक्रिया व अन्य जानकारियों को उम्मीदवार विश्वविद्यालय की वेबसाइट [www.hau.ac.in](http://www.hau.ac.in) से प्राप्त कर सकते हैं।

### पहली बार कोर्स शुरू

कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एस.के. सहवाग ने बताया कि इस कोर्स ने दाखिला कृषि महाविद्यालय हिसार, कृषि महाविद्यालय कौल(कैथल) व कृषि महाविद्यालय बावल(ऐवाड़ी) के लिए अलग-अलग होने व उनकी कथाएं भी अलग-अलग लगाई जाएंगी। उन्होंने बताया कि दो सेमेस्टर वाले इस डिप्लोमा ने दाखिला 12वीं कक्षा में प्राप्त अंकों और संबंधित दोनों में अनुग्रह के 80 : 20 के अनुपात में किया जाएगा। इसके लिए कम से कम छह महीने और अधिकतम दो वर्ष का अनुभव से मान्य होगा।

### बहुत की लाभाप्रद होगा कोर्स

कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एस.के. सहवाग ने बताया कि यह डिप्लोमा उन अभ्यारियों के लिए बहुत ही फायदेमंद होगा जिनको कृषि स्टार्टअप और उर्वरक संबंधी कृषि की आधारभूत जानकारी नहीं है। यह डिप्लोमा कृषि स्टार्टअप और उर्वरक संबंधी कृषि में उपयोग के लिए विस्तार कार्यकर्ता, एवं इनपुट डीलर और अन्य तकनीकी योग्यता को बढ़ावे ने सहायता होगी। इस कोर्स को करने के बाद डिप्लोमाधारक किसान समुदाय की कृषि में कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी उपयोग के लिए बेहतर ढंग से सलयता कर सकेंगे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|------------|--------------|------|
| सिटी पल्स          | 03.07.2020 | --           | --   |

# ‘अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे’ के अवसर पर प्लास्टिक का प्रयोग न करने की सलाह : प्रोफेसर के.पी. सिंह

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। वर्तमान समय में प्लास्टिक का प्रयोग काफी बढ़ गया है। प्लास्टिक हमारे लिए हानिकारक है, लेकिन इसके दुष्प्रभावों को जानते हुए भी लोग बैग से लेकर चाय के कप के रूप तक हर चीज में इसका प्रयोग करते हैं। इसका नुकसान न केवल मासूम पशु-पक्षियों से लेकर पर्यावरण तक को हो रहा है बल्कि इससे आने वाली पीड़ियों का जीवन भी काफी प्रभावित होगा। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने व्यक्त किए। उन्होंने ‘अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे’ के अवसर पर लोगों से आह्वान किया कि वे प्लास्टिक को अपनी दैनिक इस्तेमाल की जरूरतों में शामिल न करें, क्योंकि इसका प्रयोग हानिकारक है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक से होने वाले नुकसान और

प्रोफेसर के.पी. सिंह ने बताया कि कोई भी इस बात से अनजान नहीं है कि प्लास्टिक कितना हानिकारक होती है। अन्य पदार्थ जहां मिट्टी में निल जाते हैं, वहीं प्लास्टिक को सादियों तक गलाया भी नहीं जा सकता तथा यह मिट्टी, पानी आदि में मिल कर भी उन्हें दूषित करती है। कई शहरों में प्लास्टिक बैग पर बैन होने के बावजूद लोग इसका इस्तेमाल कर रहे हैं, जो गलत है। उन्होंने कहा कि लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने के लिए ही 3 जुलाई 2009 से पूरी दुनिया में ‘अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे’ मनाने की शुरुआत हुई थी। उन्होंने कहा कि कई सामाजिक संस्थाएं, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक कर रही हैं।

इसके बढ़ते प्रयोग को रोकने के लिए ‘अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे’ मनाया जाता है। प्लास्टिक एक हानिकारक पदार्थ है और बैग के रूप में इसका प्रयोग काफी अधिक होता है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक बैग की बजाए बहुत से अन्य विकल्प हैं, जिनसे पर्यावरण को नुकसान नहीं होता है और हमें अपने दैनिक जीवन में उनको अपनाना चाहिए। प्रोफेसर के.पी. सिंह ने बताया कि कोई भी इस बात से अनजान नहीं है कि प्लास्टिक कितना हानिकारक होती है। अन्य पदार्थ जहां मिट्टी में मिल जाते हैं, वहीं प्लास्टिक को सादियों तक

गलाया भी नहीं जा सकता तथा यह मिट्टी, पानी आदि में मिल कर भी उन्हें दूषित करती है। कई शहरों में प्लास्टिक बैग पर बैन होने के बावजूद लोग इसका इस्तेमाल कर रहे हैं, जो गलत है। उन्होंने कहा कि लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने के लिए ही 3 जुलाई 2009 से पूरी दुनिया में ‘अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे’ मनाने की शुरुआत हुई थी। उन्होंने कहा कि कई सामाजिक संस्थाएं, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक कर रही हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|------------|--------------|------|
| सिटी पल्स          | 03.07.2020 | --           | --   |

# आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड की तकनीकों को यहां भी अपनाएं विद्यार्थी: प्रो. के.पी. सिंह

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विद्यार्थियों का एक 12 सदस्यीय दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद हिसार लौट आया है। यह दल 17 जून को हिसार लौटा था और तब से ही विश्वविद्यालय के फैकल्टी हाउस में बने कोविड-19 सेंटर में क्लारंटाइन किया हुआ था।

3 जुलाई को क्लारंटाइन का समय समाप्त होने पर यह दल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह से मिला और अपने प्रशिक्षण तथा काविड-19 के चलते आई परेशानियों आदि के बारे में विस्तार से चर्चा की। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने इस दल के सभी विद्यार्थियों के समुक्ष देश लौटने पर बधाई दी है। उन्होंने विद्यार्थियों से आहार किया कि अपने इस तीन महीने के प्रशिक्षण के दौरान जो भी तकनीकें उन्होंने आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड में सीखी हैं, उनको यहां लागू करने की कोशिश करें ताकि यहां के अन्य विद्यार्थियों को भी उनसे प्रेरण मिल सके। उन्होंने विद्यार्थियों से आहार किया कि वे उत्तम गुणवत्ता वाले प्रकाशनों को बढ़ावा दें, इससे बेहतर अनुसंधानिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और गुणवत्ता में वृद्धि होगी।

अपने क्षेत्र में महारत हासिल करने के लिए प्रतिवर्ष जाता है विद्यार्थियों का दल प्रोफेसर के.पी. सिंह ने बताया कि



हिसार। आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड से लौटा चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय दिसार के विद्यार्थियों का दल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह के साथ मुलाकात करते हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी प्रतिवर्ष राष्ट्रीय कृषि उच्च शैक्षणिक परियोजना- संस्थागत विकास योजना के तहत विश्व के विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण के लिए जाते हैं ताकि उन्हें अपने क्षेत्र में और इस तीन महीने के प्रशिक्षण के दौरान जो भी तकनीकें उन्होंने आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड में सीखी हैं, उनको यहां लागू करने की कोशिश करें ताकि यहां के अन्य विद्यार्थियों को भी उनसे प्रेरण मिल सके। उन्होंने विद्यार्थियों से आहार किया कि वे उत्तम गुणवत्ता वाले प्रकाशनों को बढ़ावा दें, इससे बेहतर अनुसंधानिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और गुणवत्ता में वृद्धि होगी।

अपने क्षेत्र में महारत हासिल करने के लिए प्रतिवर्ष जाता है विद्यार्थियों का दल प्रोफेसर के.पी. सिंह ने बताया कि

तीन महीने के प्रतिक्षण के बाद आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड से लौटा चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय दिसार के विद्यार्थियों का 12 सदस्यीय दल

कुलपति ने विद्यार्थियों के उच्चवर्ग भविष्य की कामना के साथ किया उत्तम गुणवत्ता वाले प्रकाशनों व अनुसंधान को बढ़ाया देने का आहारन

राष्ट्रीय कृषि उच्च शैक्षणिक परियोजना- संस्थागत विकास योजना के तहत 10 व 13 मार्च को जया था दल

जानकारियां हासिल की। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया में गेहूं की रुवा बीमारी संबंधी शोध के लिए विश्व के बड़े केंद्रों में से एक है। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड जैसे विकसित देश आधुनिक तकनीकों, साफ्टवेर व मौसीनरियों का प्रयोग करके ग्रीन हाउस में सारा साल रिसर्च करते रहते हैं, जबकि अपने यहां मौसम अनुसार ही रिसर्च की जाती है। यहां की रिसर्च के परिणाम भी अपनी तुलना में आधुनिक तकनीकों की जानकारियां विद्यार्थियों के दल ने बताया कि आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी में जाकर उन्होंने गेहूं में आने वाली रुतुआ बीमारी को लेकर अनेक



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|------------|--------------|------|
| पाठक पक्ष          | 03.07.2020 | --           | --   |

### संकर बाजरे का हर साल नया बीज ही बोएं किसानः प्रोफेसर के.पी.सिंह

#### पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 3 जुलाई : प्रदेश में मानसून जल्द ही दस्तक देने वाला है। ऐसे में किसान भी फसलों की बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पर्खवाड़ा सबसे उत्तम समय है। परंतु बागानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

मानसून के साथ बाजरे की बिजाई का समय भी आ गया है। बाजरे की बिजाई के लिए जुलाई का प्रथम पर्खवाड़ा सबसे उत्तम समय है। परंतु बागानी इलाकों में मानसून की पहली वर्षा होने पर ही बिजाई करें। इसी को ध्यान में रखते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय



के कुलपति प्रोफेसर के.पी.सिंह ने बायोफोटोफाइड किस्मों का किसानों से आहवान किया कि वे अनुमोदन किया है जिनमें लौह तत्व अपने उपलब्ध साधनों के हिसाब से एवं जिक अन्य किस्मों के मुकाबले बीज आदि का प्रबंध कर लें। बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान संकर बाजरे का हर साल नया बीज लेकर ही बोएं। उन्होंने बताया कि बाजरे की फसल सिंतम्बर के अन्त या अक्टूबर में पक कर तैयार हो जाती है। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एम.के.सहरावत ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाजरे की दो नई

संकर बाजरा किस्म हैं। इसके दानों व सूखे चारे की औसत उपज क्रमशः 15 किंटल व 35.2 किंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म 75-80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। ये दानों किस्में अच्छी रखरखाव करने पर एच-एचबी 299 व एच-एचबी 311 क्रमशः 19.6 व 18.0 किंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती हैं। ये किस्में जोगिया रोगरोधी हैं। उन्होंने बताया कि इन किस्मों के अलावा बाजरे की मुख्य किस्मों में एच-एचबी-223, एच-एचबी 197, एच-एचबी-67 (संशोधित), एच-एचबी 226, एच-एचबी 234, एच-एचबी 272 शामिल हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|------------|--------------|------|
| नित्य शक्ति        | 03.07.2020 | --           | --   |

## आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड की तकनीकों को यहां भी अपनाएं विद्यार्थी : बीसी



**नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज़**  
हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विद्यार्थियों का एक 12 सदस्यीय दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद हिसार लौट आया है। यह दल 17 जून को हिसार लौटा था और तब से ही विश्वविद्यालय के फैकल्टी

हाउस में बने कोविड-19 सेंटर में कारंटाइन किया विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे उत्तम गुणवत्ता हुआ था। 3 जुलाई को कारंटाइन का समय समाप्त वाले प्रकाशनों को बढ़ावा दें, इससे बेहतर होने पर यह दल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर अनुसंधानिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और केरी, सिंह से मिला और अपने प्रशिक्षण तथा गुणवत्ता में बढ़ि होगी।

कोविड-19 के चलते आई परेशानियों आदि के बारे में विस्तार से चर्चा की। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के, पी. सिंह ने इस दल के सभी विद्यार्थियों के सम्मुख देश लौटने पर बधाई दी है। उन्होंने

13 मार्च को न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी में गया था। दल में शामिल बीएससी अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों आरजु, संचा, अंजली, हेमत, भूषण, सुमय यात्रिक, प्रतीक, अमन मदन, विनोत कुमार, साहिल व कांक्षा जै ने बताया कि कोविड-19 के चलते सहिल व कांक्षा जै ने बताया कि कोविड-19 के चलते उन्हें कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ा लेकिन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के, पी. सिंह व संस्थान निदेशक डॉ. एस. के. सहारावत उनसे अनुसंधान निदेशक डॉ. एस. के. सहारावत उनसे लगातार संपर्क में रहे और उनकी हाँसला अफजाई देशों के विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण के लिए जाते हैं ताकि उन्हें अपने क्षेत्र में और अधिक महात्मा हासिल करते रहे। विद्यार्थियों के दल ने बताया कि विद्यार्थियों आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी में जाकर उन्होंने लागू करने की कोशिश करें ताकि यहां के अन्य के दो दल विदेश गए थे, जिनमें एक दल 10 मार्च गेहूं में आने वाली रुआ बीमारी को लेकर अनेक विद्यार्थियों को भी उनसे प्रेरणा मिल सके। उन्होंने को आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी व दूसरा दल जानकारियां हाँसिल की।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|------------|--------------|------|
| नित्य शक्ति        | 03.07.2020 | --           | --   |

# हकूमि में शुरू होगा कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा

**कोर्स में आवेदन के  
लिए उम्मीदवार का  
12वीं पास होना  
जरूरी**

**नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज  
हिसार।** चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पहली बार कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू किया जाएगा जो युवाओं को स्वावलंबी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

यह कोर्स कुलपति प्रोफेसर के.पी.सिंह की युवाओं के प्रति दूरदर्शी सोच के परिणामस्वरूप व प्रयासों से शुरू किया जा रहा है। कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह के प्रयासों से विश्वविद्यालय में इस तरह के कई कोर्स पहले भी शुरू

किए जा चुके हैं जो किसानों, संबंधी फीस, दाखिला प्रक्रिया व युवाओं, महिलाओं व आम लोगों अन्य जानकारियों को उम्मीदवार को स्वावलंबी बनाने में काफी विश्वविद्यालय की वेबसाइट से प्राप्त उपयोगी साबित हो रहे हैं।

कम छह महीने और अधिकतम दो वर्ष का अनुभव ही मान्य होगा।

#### लाभप्रद होगा कोर्स

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि यह डिप्लोमा उन अभ्यार्थियों के लिए बहुत ही फायदेमंद होगा जिनको कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी कृषि की आधारभूत जानकारी नहीं है। यह डिप्लोमा कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी कृषि में उपयोग के लिए विस्तार कार्यकर्ता, एग्री इनपुट डीलर और अन्य तकनीकी योग्यता को बढ़ाने में सहायक होगा।

इस कोर्स को करने के बाद डिप्लोमाधारक किसान समुदाय की कृषि में कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी उपयोग के लिए बेहतर ढंग से सहायता कर सकेंगे।

#### 30 सीटों पर होगा दाखिला पहली बार कोर्स शुरू

पहली बार शुरू होने वाले इस एक कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता निर्धारित की गई हैं, जिसमें से इस कोर्स में दाखिला कृषि अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के महाविद्यालय हिसार, कृषि लिए 20 प्रतिशत, पिछड़ी जाति के महाविद्यालय कौल (कैथल) व उम्मीदवारों के लिए 27 प्रतिशत कृषि महाविद्यालय बावल और आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग (रेवाड़ी) के लिए अलग-अलग के लिए 10 प्रतिशत सीटों का होंगे व उनकी कक्षाएं भी अलग-निर्धारण किया गया है। उन्होंने अलग लगाई जाएंगी। उन्होंने बताया कि आवेदन के लिए बताया कि दो सेमेस्टर वाले इस उम्मीदवार का 12वीं पास होना डिप्लोमा में दाखिला 12वीं कक्षा जरूरी है और 18 से 55 वर्ष तक में प्राप्त अंकों और संबंधित क्षेत्र में की आयु वर्ग के इच्छुक उम्मीदवार अनुभव के 80 : 20 के अनुपात में इसमें आवेदन कर सकते हैं। कोर्स किया जाएगा। इसके लिए कम से



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|------------|--------------|------|
| पांच बजे न्यूज     | 03.07.2020 | --           | --   |

# आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड की तकनीकों को यहां भी अपनाएं विद्यार्थी : प्रो. सिंह

तीन महीने के प्रशिक्षण के बाद आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड से लौटा हक्की के विद्यार्थियों का 12 सदस्यीय दल

पांच बजे व्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विद्यार्थियों का एक 12 सदस्यीय दल तीन महीने के प्रशिक्षण के बाद हिसार लौटा आया है। यह दल 17 जुन को हिसार लौटा था और तब से ही विश्वविद्यालय के फैकल्टी हाउस में बने कोविड-19 सेट में क्रॉसट्राइन किया हुआ था। 3 जुलाई को क्वारंटाइन का समय समाप्त होने पर यह दल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह से मिल और अपने प्रशिक्षण तथा कोविड-19 के चलते आई परेशानियों आगे के बारे में विस्तार से चर्चा की। विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने इस दल के सभी विद्यार्थियों के सकृदान देश लाटने पर बधाई दी है। उन्होंने विद्यार्थियों



कुलपति महोदय ने बताया कि प्रयासों से ही वे सकृदान अपने बतन लौट विद्यार्थियों के दो दल विदेश गए पाए हैं, जिसके लिए कुलपति व थे, जिनमें एक दल 10 मार्च को विश्वविद्यालय प्रशासन का धन्यवाद करते हैं। आस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी गेहू की रसवां बीमारी संबंधी हासिल व दूसरा दल 13 मार्च को की कई जानकारियां

न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी में विद्यार्थियों के दल ने बताया कि आस्ट्रेलिया गया था। विद्यार्थियों का चयन की सिडनी यूनिवर्सिटी में जाकर उन्होंने गेहूं उनके टेस्ट व समूह चर्चा जैसी में अनेक बाली गेहूं बीमारी को लेकर अनेक कहां प्रक्रियाओं के आधार पर किया जानकारियां हासिल की। उन्होंने बताया कि गया था, जिसमें बॉएससी अंतिम आस्ट्रेलिया में गेहूं की रसवां बीमारी संबंधी वर्ष के विद्यार्थी ही शामिल थे।

रोश के लिए विश्व के बड़े केंद्रों में से एक कुलपति व विश्वविद्यालय प्रशासन का जताया आभार जैसे विकसित देश आधुनिक तकनीकों, दल में शामिल बॉएससी साफ्टवेयर व मशीनरीयों का प्रयोग करके ग्रीन

हाउस में सारा साल रिसर्च करते रहते हैं। अंजली, हेमंत, भूषण, सुमेत मलिक, प्रतीक, जब्बाकि अपने यहां मौसम अनुसार ही रिसर्च प्रोफेसर के.पी. सिंह ने बताया कि चौधरी अपन मदान, विनेत कुमार, साहिल व कशीर जी जाती है। वहां की रिसर्च के परिणाम भी ने बताया कि कोविड-19 के चलते उन्हें कुछ अपनी लुटना में अधिनिक तकनीकों की वजह

परियोजना- संस्थागत विकास योजना के तहत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी.सिंह व उन्होंने बताया कि विकसित देश मशीनरी विश्व के विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों में अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहायत व तकनीकों का अधिक प्रयोग कर उत्पादन प्रशिक्षण के लिए जाते हैं ताकि उन्हें अपने क्षेत्र उन्से लगातार संपर्क में रहे और उनकी हासिल को बढ़ावा दें। अपने यहां ऐसी तकनीकों में और अधिक महारत हासिल हो सके। अफजाई करते रहे। विश्वविद्यालय प्रशासन के अपनाने की अभी जरूरत है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|------------|--------------|------|
| पांच बजे न्यूज     | 03.07.2020 | --           | --   |

# ‘अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे’ अवसर पर प्लास्टिक का प्रयोग न करने का ले निश्चय : प्रौ. सिंह

### पांच बजे न्यूज

हिसार। वर्तमान समय में प्लास्टिक का प्रयोग काफी बढ़ गया है। प्लास्टिक हमारे लिए हानिकारक है, लेकिन इसके दुष्प्रभावों को जानते हुए भी लोग बैग से लेकर चाय के कप के रूप तक हर चीज में इसका प्रयोग करते हैं। इसका नुकसान न केवल मासूम पशु-पक्षियों से लेकर पर्यावरण तक को हो रहा है बल्कि इससे आने वाली पीड़ियों का जीवन भी काफी प्रभावित होगा। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह ने व्यक्त किए।

उन्होंने ‘अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे’ के अवसर पर लोगों से आह्वान किया कि वे प्लास्टिक को अपनी दैनिक इस्तेमाल की जरूरतों में शामिल न करें, क्योंकि इसका प्रयोग हानिकारक है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक से होने वाले नुकसान और इसके बढ़ते प्रयोग को रोकने के लिए ‘अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे’ मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक एक

हानिकारक पदार्थ है और बैग के रूप में इसका प्रयोग काफी अधिक होता है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक बैग की बजाए बहुत से अन्य विकल्प हैं, जिनसे पर्यावरण को नुकसान नहीं होता है और हमें अपने दैनिक जीवन में उनको अपनाना चाहिए।

प्रोफेसर के.पी. सिंह ने बताया कि कोई भी इस बात से अनजान नहीं है कि प्लास्टिक कितना हानिकारक होती है। अन्य पदार्थ जहां मिट्टी में मिल जाते हैं, वहीं प्लास्टिक को सदियों तक गलाया भी नहीं जा सकता तथा यह मिट्टी, पानी आदि में मिल कर भी उन्हें दूषित करती है। कई शहरों में प्लास्टिक बैग पर बैन होने के बावजूद लोग इसका इस्तेमाल कर रहे हैं, जो गलत है। उन्होंने कहा कि लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने के लिए ही 3 जुलाई 2009 से पूरी दुनिया में ‘अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे’ मनाने की शुरुआत हुई थी। उन्होंने कहा कि कई सामाजिक संस्थाएं, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक कर रही हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|--------------------|------------|--------------|------|
| पांच बजे न्यूज़    | 03.07.2020 | --           | --   |

# कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा से युवा होंगे स्वावलंबी

## हकूमि में पहली बार शुरू होगा कोर्स

### पांच बजे न्यूज़

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पहली बार कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू किया जाएगा जो युवाओं को स्वावलंबी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह कोर्स कुलपति प्रोफेसर के.पी.सिंह की युवाओं के प्रति दूरदर्शी सोच के परिणामस्वरूप व प्रयासों से शुरू किया जा रहा है। कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह के प्रयासों में विश्वविद्यालय में इस तरह के कई कोर्स पहले भी शुरू किए जा चुके हैं जो किसानों, युवाओं, महिलाओं व आम लोगों को स्वावलंबी बनाने में काफी उपयोगी साधित हो रहे हैं।

#### 30 सीटों पर होगा दाखिला

पहली बार शुरू होने वाले इस एक वर्षीय डिप्लोमा में कुल 30 सीट नियमित की गई हैं, जिसमें से अनुमति जाति के उम्मीदवारों के

लिए 20 प्रतिशत, पिछड़ी जाति के उम्मीदवारों के लिए 27 प्रतिशत और आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग के लिए 10 प्रतिशत सीटों का निर्णय दिया गया है। उन्होंने बताया कि आवंदन के लिए उम्मीदवार का 12वीं पास होना जरूरी है और 18 से 55 वर्ष तक की आयु वर्ग के इच्छक उम्मीदवार इसमें आवंदन कर सकते हैं। कोर्स संबंधी फीस, दाखिला प्रक्रिया व अन्य जानकारियों को उम्मीदवार विश्वविद्यालय की वेबसाइट [www.hau.ac.in](http://www.hau.ac.in) से प्राप्त कर सकते हैं।

#### पहली बार कोर्स शुरू

कृषि महाविद्यालय के अधिनाता डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि इस कोर्स में दाखिला कृषि महाविद्यालय हिसार, कृषि महाविद्यालय कौल(कैथल) व कृषि महाविद्यालय बावल (रेवाड़ी) के लिए अलग-अलग होंगे व उनकी कशाएं भी अलग-अलग लगाइ

जाएंगी। उन्होंने बताया कि दो सेमेस्टर बाले इस डिप्लोमा में दाखिला 12वीं कक्षा में प्राप्त अंकों और संबंधित क्षेत्र में अनुभव के 80 : 20 के अनुपात में किया जाएगा। इसके लिए कम से कम छह महीने और अधिकतम दो वर्ष का अनुभव ही मान्य होगा।

#### बहुत की लाभप्रद होगा कोर्स

कृषि महाविद्यालय के अधिनाता डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि यह डिप्लोमा उन अभ्यार्थियों के लिए बहुत ही फायदेमंद होगा जिनको कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी कृषि की आधारभूत जानकारी नहीं है। यह डिप्लोमा कृषि रसायन और उर्वरक संबंधी कृषि में उपयोग के लिए विस्तार कार्यक्रम, एग्री इनपुट डीलर और अन्य तकनीकी योग्यता को बढ़ाने में सहायता कर सकेंगे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम          | दिनांक            | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|-----------------------------|-------------------|--------------|------|
| ऑनलाइन<br>( यूनिक हरियाणा ) | <b>03.07.2020</b> | ---          | ---  |



#### 30 सीटों पर होगा दाखिला

पहली बार शुरू होने वाले इस एक वर्षीय डिप्लोमा में कुल 30 सीट निर्धारित की गई हैं, जिसमें से अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए 20 प्रतिशत, पिछड़ी जाति के उम्मीदवारों के लिए 27 प्रतिशत और आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग के लिए 10 प्रतिशत सीटों का निर्धारण किया गया है। उन्होंने बताया कि आवेदन के लिए उम्मीदवार का 12वीं पास होना जरूरी है और 18 से 55 वर्ष तक की आयु वर्ग के इच्छुक उम्मीदवार इसमें आवेदन कर सकते हैं। कोर्स संबंधी फीस, दाखिला प्रक्रिया व अन्य जानकारियों को उम्मीदवार विश्वविद्यालय की वेबसाइट [www.hau.ac.in](http://www.hau.ac.in) से प्राप्त कर सकते हैं।

#### पहली बार कोर्स शुरू

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि इस कोर्स में दाखिला कृषि महाविद्यालय हिसार, कृषि महाविद्यालय कौल(कैथल) व कृषि महाविद्यालय बावल (रेवाड़ी) के लिए अलग-अलग होंगे व उनकी कक्षाएं भी अलग-



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम          | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|-----------------------------|------------|--------------|------|
| ऑनलाइन<br>( यूनिक हरियाणा ) | 03.07.2020 | ---          | ---  |

# H.A.U में कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू होगा

July 3, 2020 • Rakesh • Haryana News

**हिसार: 3 जुलाई 2020**

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पहली बार कृषि रसायन एवं उर्वरक में एक वर्षीय डिप्लोमा शुरू किया जाएगा जो युवाओं को स्वावलंबी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह कोर्स कुलपति प्रोफेसर के.पी.सिंह की युवाओं के प्रति दूरदर्शी सोच के परिणामस्वरूप व प्रयासों से शुरू किया जा रहा है। कुलपति प्रोफेसर के.पी. सिंह के प्रयासों से विश्वविद्यालय में इस तरह के कई कोर्स पहले भी शुरू किए जा चुके हैं जो किसानों, युवाओं, महिलाओं व आम लोगों को स्वावलंबी बनाने में काफी उपयोगी साबित हो रहे हैं।

CH. CHARAN SINGH HARYANA AGRICULTURAL UNIVERSITY



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम      | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|-------------------------|------------|--------------|------|
| ऑनलाइन<br>( जीवन आधार ) | 03.07.2020 | ---          | ---  |

**न केवल मासम पशु पक्षियों व पर्यावरण को बल्कि आने वाली पीढ़ियों को होगा प्लास्टिक का नुकसान : केपी सिंह**

SHARE 0 f G+



#### ‘अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे’ अवसर पर प्लास्टिक का प्रयोग न करने की सलाह

हिसार,  
बहीमान समय में प्लास्टिक का प्रयोग काफी बढ़ गया है। प्लास्टिक हमारे लिए हानिकारक है, लेकिन इसके दुष्प्रभावों को जानते हुए भी लोग बैग से लेकर चाय के कप के रूप तक हर थोड़ा मैं इसका प्रयोग करते हैं। इसका नुकसान न केवल मासम पशु-पक्षियों से लेकर पर्यावरण तक को हो रहा है बल्कि इससे आने वाली पीढ़ियों का जीवन भी काफी प्रभावित होगा।

यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर केपी सिंह ने ‘अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे’ के अवसर जनता से प्लास्टिक छोड़ने का आह्वान करते हुए कहा। उन्होंने कहा कि वे प्लास्टिक का अपनी दैनिक इस्तेमाल की जरूरतों में शामिल न करें, क्योंकि इसका प्रयोग हानिकारक है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक से होने वाले नुकसान और इसके बदले प्रयोग का राखने के लिए ‘अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे’ मनाया जाता है। प्लास्टिक एक हानिकारक पदार्थ है और बैग के रूप में इसका प्रयोग काफी अधिक होता है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक बैग की बजाए बहुत से अन्य बिल्ड हैं, जिनसे पर्यावरण को नुकसान नहीं होता है और हमें अपनी दैनिक जीवन में उनका अपनाना चाहिए। प्रोफेसर केपी सिंह ने बताया कि काफ़ी भी इस बात से अनजान नहीं है कि प्लास्टिक विलमा हानिकारक होती है। अन्य पदार्थ जहाँ निही में मिल जाते हैं, वहीं प्लास्टिक का संदिधा तक गलतार्थी नहीं जा सकता तथा यह सिंही, पानी आदि में मिल कल भी उन्हें दूषित करती है। काफ़ी शहरों में प्लास्टिक बैग पर बैन होने के बावजूद लोग इसका इस्तेमाल कर रहे हैं, जो गलत है। उन्होंने कहा कि लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के परिणामों के लिए ही 3 जुलाई 2009 से पूरी दुनिया में ‘अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग फ्री डे’ मनाने की शुरुआत हुई थी। उन्होंने कहा कि वह सामाजिक संस्थाएं, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के परिणामों के बारे में जागरूक कर रहा है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार-पत्र का नाम      | दिनांक     | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|-------------------------|------------|--------------|------|
| ऑनलाइन<br>( जीवन आधार ) | 03.07.2020 | ---          | ---  |

#### आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड की तकनीकों को यहां भी अपनाएं विद्यार्थी : केपी सिंह

SHARE    0    f    G+    S



#### तीन महीने के प्रशिक्षण के बाद आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड से लौटा हिसार के विद्यार्थियों का 12 सदस्यीय दल

हिसार,

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विद्यार्थियों का 12 सदस्यीय दल तीन महीने के विशेष प्रशिक्षण के बाद हिसार लौट आया है। यह दल 17 जून को हिसार लौटा था और तब से ही विश्वविद्यालय के फैकल्टी हाउस में कोविड-19 सेंटर से कावाटाइन किया हुआ था। 3 जुलाई को कावाटाइन का समय समाप्त होने पर यह दल विश्वविद्यालय के कुलपति प्राप्तेसर केपी सिंह से मिला और अपने प्रशिक्षण तथा कोविड-19 के चलते आई प्रश्नान्वयियों आदि के बारे में विस्तार से चर्चा की गयी।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्राप्तेसर केपी सिंह ने इस दल के सभी विद्यार्थियों के सुनावने पर बधाई दी है। उन्होंने आरटी-सीटों में सीधी है, उनको यहां लाए करने की कामयादी दी है। उन्होंने यहां लाए करने के बाद विद्यार्थियों को भी उनसे पेरेणा मिल रखें। उन्होंने विद्यार्थियों से आहवान किया कि वे उत्तर गुणवत्ता वाले प्रश्नों को बढ़ावा दें, इससे बहुत अनुरोधित गतिविधियों का बढ़ावा मिलेगा और गुणवत्ता में बढ़ी होगी।

अपने को नए महारात हासिल करने के लिए प्रतिवर्ष जाता है विद्यार्थियों का दल

प्राप्तेसर केपी सिंह ने बताया कि विद्यार्थी के बाद विश्वविद्यालय के विद्यार्थी गण्डीय कृषि उच्च शैक्षणिक परियोजना-संस्थागत विकास योजना के तहत विश्व के विडिल्न देशों के विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण के लिए जाते हैं ताकि उन्हें अपने सेवा में और अधिक सहायता हासिल हो सके। कुलपति महाराज ने बताया कि विद्यार्थियों के दो दल विदेश गए थे, जिनमें एक दल 10 मार्च को आस्ट्रेलिया के बिडिली यूनिवर्सिटी व दूसरे दल 13 मार्च को न्यूजीलैंड के मैसूरी यूनिवर्सिटी में गया था। विद्यार्थियों का चयन उनको टेस्ट व स्मूथ चर्ची जैसी कई प्रक्रियाओं के आधार पर किया गया था, जिसमें बोर्सली अंतिम वर्ष के विद्यार्थी ही शामिल थे।

कुलपति व विश्वविद्यालय प्राप्तान के जरूरत आधार

दल में शामिल बोर्सली अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों आरटी-सेड्यू, अंजलि, हेमंत, भूषण, सुमय मालिक, प्रतीक, अमन मदन, विनीत कुमार, साहित व कन्नौज ने बताया कि कोविड-19 के चलते उन्हें कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा लेकिन विश्वविद्यालय के कुलपति प्राप्तेसर के पी.विडिल व अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके.सहरावत उनसे लगातार संपर्क में रहे और उनको हीसला अपकाइ बताते हैं।

विश्वविद्यालय प्राप्तान के प्रयोग से ही है सकूल अपने दोनों लीट पाए हैं, जिसके लिए कुलपति व विश्वविद्यालय प्राप्तान का धन्यवाद करते हैं।

गेहूं की रोता बीमारी संबंधी हासिल की कई जानकारियां

विद्यार्थियों के दल ने बताया कि आस्ट्रेलिया के बिडिली यूनिवर्सिटी में जाकर उन्होंने गेहूं में आने वाली गेहूं बीमारी को लेकर अनेक जानकारियों हासिल की। उन्होंने बताया कि आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड जैसे विकासित देश आधुनिक तकनीकों, साफ-विद्यर व मशीनरियों का प्रयोग करके गेहूं हाइट में सारा साल रियर्च करते हुए हैं, जोकि अपने यहां मौसम अनुसार ही रिसर्च की जाती है। गेहूं की रिसर्च के पाठ्यक्रम भी अपनी तुलना में आधिक तकनीकों की वज़ह से ज़्यादा आ जाते हैं।

उन्होंने बताया कि विकासित देश मौसमी व रसायनीकों का अधिक प्रयोग कर उत्पादन कर बढ़ाते हैं। अपने यहां ऐसी तकनीक अपनाने की अपील जरूरत है।